सप्रे ने आजादी के आंदोलन से जनमानस को जोड़ा

रिपोर्टर • IamBhopal
Mobile no. 9827080406

हिंदी पत्रकारिता के अग्रदूत माने जाने वाले माधवराव सप्रे के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। सप्रेजी का लेखन ऐसा था जो लोगों को स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ने के लिए न केवल प्रेरित करता है बल्कि विवश करता था। माधव राव सप्रे स्मृति समाचार-पत्र संग्रहालय में सोमवार को आयोजित राष्ट्रीय परिसंवाद में माधवराव सप्रे और उनका युग विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। सप्रे संग्रहालय तथा साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा यह आयोजन किया गया। अपने

उद्बोधन में मुख्य अतिथि प्रो. केजी सुरेश ने कहा कि वे एक ऐसे पत्रकार थे जिन पर पहली बार राजद्रोह का मुकदमा चला था। उनकी लेखनी की खूबी यह थी कि उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन के साथ ही सामाजिक कुरीतियों पर भी प्रहार किया। साहित्यकार डॉ. संतोष चौबे ने कहा कि सप्रे जी हिंदी के लिए तब कार्य कर रहे थे जब ब्रज भाषा और खड़ी बोली की स्थापना के लिए द्वंद्व चल रहा था। विशेष अतिथि प्रो. चितरंजन मिश्र ने कहा कि उनकी कहानी एक टोकरी भर मिट्टी हिंदी की पहली प्रामाणिक कहानी मानी गई है। विशेष अतिथि अजय शर्मा ने भी अपने विचार रखे।

मोनोग्राफ 'माधवराव सप्रे' का विमोचन

इसके पूर्व सप्रे संग्रहालय के संस्थापक निदेशक विजयदत्त श्रीधर ने कहा कि यह वर्ष सप्रे जी का 150 वां जन्म वर्ष है। सार्ध शताब्दी वर्ष में सप्रे संग्रहालय ने उनके जन्मस्थल पथरिया, छत्तीसगढ़ सहित नई दिल्ली में आयोजन कर उनका स्मरण किया। इस अवसर पर साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित डॉ. सुशील त्रिवेदी के मोनोग्राफ माधवराव सप्रे का विमोचन भी किया गया। संचालन संग्रहालय की निदेशक डॉ. मंगला अनुजा ने किया।